4. हमारी वित्तीय संस्थाएं

1. व्यावसायिक बैंक कितने प्रकार की जमाराशि स्वीकार करते हैं? संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर - लोगों की बचत को जमा के रूप में स्वीकार करना व्यावसायिक बैंकों का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। बैक प्रायः चार प्रकार के खातों में रकम जमा करते हैं- स्थायी जमा, चालू जमा, संचयी जमा तथा आवर्ती जमा स्थायी जमा एक निश्चित अवधि के लिए होती है तथा सामान्यतः इसके पूर्व इस खाते से रकम वापस नहीं ली जा सकती। ऐसी जमा पर ब्याज की दर अपेक्षाकृत ऊँची रहती है। चालू जमा खाते में धन जमा करने या निकालने पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं रहता और जमाकर्ता इसमें कभी भी रुपया जमा कर सकता है या निकाल सकता है। इस जमा पर बैंक प्रायः कुछ भी ब्याज नहीं देता है। संचयी अथवा आवर्ती जमा में ग्राहक प्रतिमाह एक निश्चित रकम एक निश्चित अवधि के लिए जमा करते हैं। इन जमाओं पर ब्याज की दर स्थायी जमा से कम रहती है।

2. भारतीय रिजर्व बैंक के विभिन्न कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - 1भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केंद्रीय बैंक है तथा इसके मुख्य कार्य इस प्रकार हैं-

(i) **पत्र- मुद्रा का निर्गमन** - भारतीय रिजर्व बैंक को नोट- निर्गमन, अर्थात पत्र - मुद्रा जारी करने का एकाधिकार है। एक रुपया के नोट को छोड़कर देश में अन्य सभी नोट भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए जाते हैं।

(ii) **साख का नियमन** - पत्र - मुद्रा जारी करने के साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक देश में साख का भी नियमन एवं नियंत्रण करता है।

(iii) **सरकार का बैंकर** - सरकार के बैंकिंग-संबंधी सभी कार्य भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संपन्न किए जाते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक सरकार के बैंकर, एजेंट एवं सलाहकार के रूप में कार्य करता है।

(iv) **बैंकों का बैंक** - भारतीय रिजर्व बैंक देश के सभी बैंकों का बैंक होता है और उनका पथप्रदर्शन करने के साथ-साथ उनपर नियंत्रण भी रखता है।

3. मुद्रा बाजार तथा पूँजी बाजार की वित्तीय संस्थाओं में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर - वित्तीय संस्थाओं को प्रायः दो वर्गों में विभाजित किया गया है- मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाएँ तथा पूँजी बाज़ार की वित्तीय संस्थाएँ । मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाएँ साख या ऋण का अल्पकालीन लेन-देन करती हैं। भारतीय मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाओं में भारतीय रिजर्व बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंक एवं अन्य व्यावसायिक बैंक, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक आदि प्रमुख हैं। पूँजी बाजार की संस्थाएँ उद्योग और व्यापार की दीर्घकालीन साख की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। बड़ी कंपनियों एवं व्यावसायिक संस्थानों की दीर्घकालीन पूँजी का एक बड़ा भाग अंशपत्रों या हिस्सों के विक्रय से प्राप्त होता है तथा इनका क्रय-विक्रय पूँजी बाजार में ही होता है।

4. हमारे राज्य की वित्तीय संस्थाओं को कितने वर्गों में बाँटा जा सकता है ?

उत्तर - हमारे राज्य की वित्तीय संस्थाओं को दो मुख्य वर्गों में बाँटा जा सकता है- संगठित क्षेत्र की संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ तथा असंगठित क्षेत्र की गैर-संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ | संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ वे हैं जिनपर भारतीय रिजर्व बैंक अथवा सरकार का नियंत्रण रहता है। इसके विपरीत, गैर-संस्थागत वित्तीय संस्थाओं में महाजन, भू-स्वामी, व्यापारी आदि शामिल हैं जो साख के परंपरागत स्रोत हैं। इन संस्थाओं पर सरकार का कोई प्रभावपूर्ण नियंत्रण नहीं है। राज्य में कार्यरत वित्त के संस्थागत साधनों के भी तीन मुख्य प्रकार हैं- बैंकिंग संस्थाएँ, राज्य की वित्तीय संस्थाएँ तथा राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ। इनमें बैंकिंग संस्थाएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। बैंकिंग संस्थाओं में व्यावसायिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा सहकारी बैंकों को सम्मिलित किया जाता है।

5. सूक्ष्म वित्त योजना क्या है ?

अथवा, सूक्ष्म वित्त योजना को परिभाषित करें।

उत्तर - अब अनेक विकासशील देश यह अनुभव कर रहे हैं कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे पारंपरिक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों से निर्धनता की समस्या का समाधान संभव नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इस प्रकार की निर्धनता मुख्यतः इन देशों की कमजोर ग्रामीण अधिसंरचना के कारण उत्पन्न होती है। इस दृष्टि से सूक्ष्म वित्त योजना निर्धनता निवारण का एक सक्षम विकल्प है। इसके द्वारा स्वयं-सहायता समूहों को व्यावसायिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों तथा सहकारी बैंकों से संलग्न करने, अर्थात जोड़ने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार, इस योजना से निर्धन परिवारों को स्वयं-सहायता समूहों के माध्यम से बैंक आदि संस्थागत स्रोतों से साख अथवा ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

6. स्वयं-सहायता समूह के क्या लाभ हैं ?

उत्तर - स्वयं-सहायता समूह के कई लाभ हैं-

(i) यह सदस्यों (गरीब लोगों) में बचत को प्रोत्साहित करता है।

(ii) सदस्यों को आसान किस्तों पर यह सस्ता ऋण उपलब्ध कराता है तथा सेठ-साहूकारों के शोषण से उन्हें बचाता है।

(iii) ग्रामीण अंचलों एवं कस्बों में यह स्वरोजगार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देता है।

(iv) सदस्यों को दिए जानेवाले ऋण एवं उसका उद्देश्य, ऋण की रकम, ब्याज की दर, ऋण अदायगी की अवधि आदि बातों का निर्णय इसके द्वारा ही किया जाता है। फलतः, ऋण लेने एवं वापस करने में इसके सदस्यों को कोई कठिनाई नहीं होती है।

(v) बैंकों से सूक्ष्म वित्त दिलवाने में भी यह अपने सदस्यों की सहायता करता है। बैंकों द्वारा इन समूहों को बिना किसी जमानत के ऋण देने का प्रावधान है, अतः ऋण लेना अत्यंत सहज एवं आसान हो जाता है।

7. किसानों को साख या ऋण की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर - अधिकांश भारतीय किसानों को कृषि कार्यों के लिए अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन तीन प्रकार के साख की आवश्यकता होती है। अल्पकालीन साख की आवश्यकता प्रायः 6 से 12 महीने तक के लिए होती है, इसलिए इसे मौसमी साख भी कहते हैं। इनकी माँग खाद एवं बीज खरीदने, मजदूरी चुकाने तथा ब्याज आदि का भुगतान करने के लिए की जाती है। प्रायः, फसल कटने के बाद किसान इन्हें वापस लौटा देता है। मध्यकालीन साख कृषि यंत्र, हल, बैल आदि खरीदने के लिए ली जाती है। इनकी अवधि प्रायः एक वर्ष से 5 वर्ष तक के लिए होती है। दीर्घकालीन साख की अवधि प्रायः 5 वर्षों से अधिक की होती है। किसानों को सिंचाई की व्यवस्था करने, भूमि को समतल बनाने, महँगे कृषि यंत्र आदि खरीदने के लिए इस प्रकार की साख या ऋण की आवश्यकता होती है। ये ऋण कृषि क्षेत्र में स्थायी सुधार लाने के लिए होते हैं।

हमारी वित्तीय संस्थाएँ

1. स्वयं-सहायता समूह में महिलाएँ किस प्रकार अपनी भूमिका निभाती हैं? वर्णन करें।

उत्तर - पिछले कुछ वर्षों के अंतर्गत ग्रामीण निर्धन परिवारों को कर्ज या उधार देने के कुछ नए तरीके अपनाए गए हैं। इनमें एक तरीका ग्रामीण क्षेत्र के निर्धन व्यक्तियों को छोटे-छोटे स्वयं-सहायता समूहों में संगठित करने और उनकी बचत पूँजी को एकत्रित करने पर आधारित है। स्वयं-सहायता समूहों के संचालन में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है तथा अधिकांश स्वयं-सहायता समूह महिलाओं के द्वारा संगठित किए गए हैं। एक विशेष सहायता समूह में एक-दूसरे की पड़ोसी लगभग 15-20 महिलाएँ सदस्य होती हैं। ये महिलाएँ नियमित रूप से बचत करती हैं तथा इस बचत से ही इनकी पूँजी का निर्माण होता है। सदस्य महिलाएँ अपनी ऋण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छोटे-मोटे कर्ज इस स्वयं-सहायता समूह से ही ले सकती हैं। यदि यह समूह नियमित रूप से बचत करता है, तो एक-दो वर्ष बाद वह किसी बैंक से ऋण लेने योग्य हो जाता है। बैंक समूह के नाम पर ऋण देता है तथा इसका उद्देश्य स्व-रोजगार के अवसरों का सृजन करना है। समूह द्वारा अपने सदस्यों को उनकी बंधक जमीन छुड़ाने, गृह-निर्माण, सिलाई मशीन, पशु इत्यादि संपत्ति खरीदने के लिए छोटे-छोटे ऋण दिए जाते हैं। प्रायः, निर्धन महिलाएँ ऋण लौटाने के अपने दायित्व के प्रति बहुत गंभीर होती हैं। यही कारण है कि बैंक भी इन स्वयं-सहायता समूहों को बिना किसी जमानत के ऋण देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इस प्रकार, स्वयं-सहायता समूह की महिलाएँ ग्रामीण निर्धनों को संगठित करने और उन्हें जागरूक बनाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। इससे महिलाएँ स्वावलंबी हुई हैं तथा उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

2. मुद्रा बाजार की प्रमुख वित्तीय संस्थाओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर - वित्तीय संस्थाओं को प्रायः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है- मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाएँ तथा पूँजी बाजार की वित्तीय संस्थाएँ । मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाओं में बैंकिंग संस्थाएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। भारतीय बैंकिंग प्रणाली के शीर्ष पर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया है जिसकी स्थापना 1935 में हुई थी। यह भारत का केंद्रीय बैंक है जो देश की संपूर्ण बैंकिंग व्यवस्था का नियमन करता है।

भारत की बैंकिंग प्रणाली व्यावसायिक बैंकों पर आधारित है और ये बैंक भारतीय मुद्रा बाजार के मुख्य अंग हैं। व्यावसायिक बैंकों का मुख्य कार्य जनता की बचत को जमा के रूप में स्वीकार करना तथा उद्योग एवं व्यवसाय को उत्पादक कार्यों के लिए ऋण प्रदान करना है। 1975 से सरकार ने

ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को ऋण प्रदान करने के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की एक नई योजना आरंभ की है। इन बैंकों का मुख्य कार्य ग्रामीण क्षेत्र के छोटे एवं सीमांत किसानों, कृषि श्रमिकों, कारीगरों, छोटे व्यापारियों आदि को आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

भारतीय मुद्रा बाजार के संगठित क्षेत्र में सहकारी संस्थाओं का भी विशेष महत्त्व है। सहकारी बैंकों को कृषि ऋण का आदर्श स्रोत माना जाता है। वर्तमान में देश की ग्रामीण साख का एक-चौथाई से अधिक सहकारी साख समितियाँ प्रदान करती हैं।

भारतीय मुद्रा बाजार का एक असंगठित क्षेत्र भी है जिसे देशी बैंकर की संज्ञा दी जाती है। इसे देश के विभिन्न भागों में महाजन, साहूकार, सर्राफ आदि अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी देशी बैंकरों की ही प्रधानता है।

3. राज्य स्तरीय संस्थागत वित्तीय स्रोत के कार्यों का वर्णन करें।

उत्तर - राज्य के संस्थागत वित्तीय स्रोतों में व्यावसायिक बैंक, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक महत्त्वपूर्ण हैं। इनका मुख्य कार्य उद्योग, व्यापार एवं कृषि की साख-संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना है। बिहार में वित्त के संस्थागत स्रोतों में व्यावसायिक बैंक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। राज्य के कुल ऋण वितरण का लगभग 65 प्रतिशत इन्हीं के माध्यम से होता है। व्यावसायिक बैंक कृषि एवं उद्योग दोनों ही क्षेत्रों को ऋण प्रदान करते हैं, जबकि क्षेत्रीय बैंक तथा सहकारी संस्थाएँ मुख्यतया कृषि एवं ग्रामीण साख की व्यवस्था करती हैं। सहकारी संस्थाओं को कृषि साख का आदर्श स्रोत माना जाता है। परंतु, बिहार में सहकारी समितियों के पास साधनों का अभाव है, इनका प्रबंध एवं संचालन दोषपूर्ण है तथा राज्य के कृषि ऋण में सहकारी संस्थाओं की हिस्सेदारी मात्र 10 प्रतिशत है। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का मुख्य कार्य ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को साख प्रदान करना है। इन बैंकों की कार्य-पद्धति व्यावसायिक बैंकों के समान ही है, लेकिन इनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित है। बिहार में 2 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक हैं तथा इनमें प्रत्येक बैंक राज्य के एक विशेष क्षेत्र में सेवा प्रदान करता है।

4. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर - देश में कृषि एवं ग्रामीण साख की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा इस कार्य में संलग्न विभिन्न संस्थाओं के कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए भारत सरकार ने जुलाई 1982 में राष्ट्रीय कृषि

एवं ग्रामीण विकास बैंक (National Bank for Agriculture and Rural Development, NABARD) की स्थापना की। इस बैंक ने भारतीय रिजर्व बैंक के कृषि ऋण विभाग, ग्रामीण योजना एवं ऋण कक्ष तथा कृषि पुनर्वित्त एवं विकास निगम के सभी कार्यों को अपने हाथ में ले लिया है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं अन्य कार्यकलापों के लिए ऋण उपलब्ध कराने तथा इस संबंध में नीति-निर्धारण के लिए देश की शीर्ष संस्था है।

इस बैंक के मुख्य कार्य निम्नांकित हैं।

(i) यह बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए निवेश तथा उत्पादक ऋण देनेवाली संस्थाओं के पुनर्वित्त के लिए मुख्य प्रतिनिधि का कार्य करता है।

(ii) इसका दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य पुनर्वास योजनाएँ तैयार करना, उनपर निगरानी रखना तथा ऋण उपलब्ध करानेवाली संस्थाओं का पुनर्गठन एवं उनके कर्मचारियों का प्रशिक्षण है।

(iii) इस बैंक का एक अन्य कार्य ऋण वितरण प्रणाली की क्षमता को बढ़ाने के लिए उनकी संस्थागत व्यवस्था को विकसित करना है।

(iv) यह बैंक क्षेत्रीय स्तर पर विकास कार्य में लगी सभी संस्थाओं के क्रियाकलापों में समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है।

4. हमारी वित्तीय संस्थाएं

1. भारत में वित्तीय संस्थाओं के मुख्य रूप होते हैं –

(A) दो

(B) चार

(C) तीन

(D) पाँच

Ans – (A)

2. वित्तीय संस्थाओं के प्रकार हैं –

(A) तीन

(B) चार

(C) एक

(D) दो

Ans – (D)

3. कृषि एवं ग्रामीण साख की पूर्ति के लिए किस संस्था की स्थापना की गई?

(A) विस्कोमान

(B) क्षेत्रीण ग्रामीण बैंक

(C) सहकारी बैंक

(D) नाबार्ड

Ans – (D)

4. बिहार में सांधागत वितीय संस्थाएँ कितने प्रकार के हैं?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – (D)

5. भारतीय पूँजी बाजार निम्न में से किस प्रकार का वित्त उपलब्ध कराता है?

(A) दीर्घकालीन

(B) अल्पकालीन

(C) मध्यकालीन

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

6. सहकारी बैंक किसे ऋण प्रदान करता है?

(A) उद्योगपति को

(B) उपभोक्ता को

(C) कृषक को

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (D)

7. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण किस वर्ष हुआ था?

(A) 1 अप्रैल, 1935

(B) । जनवरी, 1949,

(C) 31 जनवरी, 1935

(D) 30 जून, 1949

Ans – (B)

8. केन्द्रीय बैंक का मुख्यालय कहाँ है?

(A) दिल्ली

(B) चेन्नई

(C) मुम्बई

(D) कोलकाता

Ans – (C)

9. इनमें कौन एशिया का सबसे पुराना शेयर बाजार है?

(A) मुंबई

(B) कानपुर

(C) पटना

(D) दिल्ली

Ans – (A)

10. बिहार के वित्त का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्थागत समूह कौन है?

(A) सहकारी बैंक

(B) व्यावसायिक बैंक

(C) राष्ट्रीय संस्थाएँ

(D) राजकीय संस्थाएँ

Ans – (B)

11. भारत की वित्तीय राजधानी किस शहर को कहा गया है?

(A) दिल्ली

(B) मुम्बई

(C) पटना

(D) बंगलोर

Ans – (B)

12. भारत का केंद्रीय बैंक कौन है?

(A) पंजाब नेशनल बैंक

(B) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

(C) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

(D) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

Ans – (D)

13. निम्नलिखित में से कौन-सा संस्थान भारत में मुद्रा जारी करने के लिए अधिकृत है?

(A) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

(B) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

(C) संसद

(D) राष्ट्रपति

Ans – (A)

14. पूँजी बाजार में किस प्रकार के ऋणों का लेन-देन होता है?

(A) अल्पकाल

(B) दीर्घकाल

(C) A एवं B दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

15. भारतीय मुद्रा बाजार में किस प्रकार के ऋणों का लेन-देन होता है?

(A) अल्पकाल

(B) दीर्घ काल

(C) (A) एवं (B) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

16. इनमें से कौन-सा संस्थागत वित का साधन है।

(A) सेठ साहूकार

(B) रिश्तेदार

(C) व्यावसायिक बैंक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

17. गैर संस्थागत वित्त प्रदान करनेवाला सबसे लोकप्रिय साधन है

(A) सहकारी बैंक

(B) देशी बैंकर

(C) व्यावसायिक बैंक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

18. निम्न में से कौन संस्थागत वित्तीय संस्थाओं के उदाहरण हैं?

(A) महाजन

(B) व्यापारी

(C) रिश्तेदार

(D) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक/व्यावसायिक बैंक

Ans – (D)

19. वित्तीय संस्थाओं में किन संस्थाओं को सम्मिलित किया जाता है?

(A) व्यावसायिक बैंक

(B) सहकारी साख समितियाँ

(C) बीमा कम्पनियाँ

(D) इनमें सभी

Ans – (D)

20. गैर-संस्थागत वित्त प्रदान करने वाला सबसे लोकप्रिय साधन है -

(A) देशी बैंकर

(B) महाजन

(C) व्यापारी

(D) सहकारी बैंक

Ans – (B)

21. भारत में कितने राष्ट्रीयकृत बैंक हैं?

(A) 14

(B) 19

(C) 20

(D) 27

Ans – (A)

22. प्राथमिक कृषि साख समिति कृषक को किस तरह का ऋण प्रदान करती है?

(A) मध्यकालीन

(B) दीर्घकालीन

(C) अल्पकालीन

(D) अतिअल्पकालीन

Ans – (C)

23. शेयर बाजार की नियामक संस्था है -

(A) SIDBI

(B) SEBI

(C) RBI

(D) STOCK EXCHANGE

Ans – (D)

24. ग्रामीण बैंक की स्थापना किस वर्ष की गयी थी?

(A) 2 अक्टूबर, 1975

(B) 5 अक्टूबर, 1975

(C) 30 जून, 1975

(D) 1 अप्रैल, 1975

Ans – (A)

25. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना मुख्यतः किनके लिए की गई है?

(A) छोटे एवं सीमांत किसान

(B) व्यावसायी वर्ग

(C) स्वयं सहायता समूह

(D) सहकारिता

Ans – (A)

26. बिहार में क्षेत्रीय बैंक की स्थापना किस वर्ष को गई थी?

(A) 1970

(B) 1972

(C) 1975

(D) 1980

Ans – (C)

27. देश में अभी कार्यरत क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की संख्या है-

(A) 190

(B) 192

(C) 199

(D) 196

Ans – (D)

28. नाबार्ड की स्थापना कब की गई थी?

(A) 1980

(B) 1982

(C) 2005

(D) 1990

Ans – (B)

29. राज्य में कार्यरत केंद्रीय सहकारी बैंकों की संख्या कितनी है?

(A) 50

(C) 35

(B) 75

(D) 25

Ans – (D)

30. बैंक लिकेज कार्यक्रम की शुरुआत किस वर्ष की गई थी?

(A) 1990

(B) 1992

(C) 1994

(D) 1995

Ans – (B)

31. दीर्घकालीन ऋण प्रदान करनेवाली संस्था कौन-सी है?

(A) कृषक महाजन

(B)भूमि विकास बैंक

(C)प्राथमिक कृषि साख समिति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – (B)

32. अल्पकालीन ऋण चुकाने की अवधि..... तक होती है।

(A) 3 महीने से 6 महीने

(B) 6 महीने से 15 महीने

(C) 12 महीने से 15 महीने

(D) 15 महीने से 20 महीने

Ans – (B)

33. व्यवसायिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण कब किया गया?

(A) 1965 में

(B) 1969 में

(C)1975 में

(D) 1980 में

Ans – (B)

34. आावसायिक बैंक कितने प्रकार की जमाराशि स्वीकार करते हैं?

(A) स्थायी जमा

(B) आवर्ती जमा

(C) संचयी जमा

(D) इनमें से सभी

Ans – (D)

35. निम्न में से कौन व्यावसायिक बैंक के कार्य नहीं हैं?

(A) जमा राशि को स्वीकार करना

(B) ऋण देना

(C) मौद्रिक नीति तय करना

(D) एजेन्सी संबंधी कार्य

Ans – (C)

36. व्यवसायिक बैंकों द्वारा स्वीकार किए गए जमा में शामिल नहीं है -

(A) स्थायी जमा

(B) चालू जमा.

(C) आवर्ति जमा

(D) वस्तु जमा

Ans – (D)

37. बैंक का कार्य नहीं है -

(A) लॉकर सुविधा

(B) क्रेडिट कार्ड

(C) नगद साख

(D) स्वयं सहायता समूह बनाना

Ans – (D)

38. ओवर ड्राफ्ट किस खाता पर दिया जाता है?

(A) बचत खाता

(B) चालू खाता

(C) मियादी खाता

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – (B)

39. इनमें से कौन व्यापारिक बैंक की जमा का प्रकार नहीं है?

(A) स्थायी जमा

(B) चालू जमा

(C) अधिविकर्ष

(D) आवर्ती जमा

Ans – (C)

40. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

(A) 1934

(B) 1935

(C) 1948

(D) 1951

Ans – (B)

41. सहकारिता के विकास पर किस पंचवर्षीय योजना में बल दिया गया?

(A) प्रथम

(B) द्वितीय

(C) तृतीय

(D) चतुर्थ

Ans – (A)

42. किसी गाँव में कम-से-कम कितने व्यक्ति मिलकर एक प्राथमिक साख समिति का निर्माण कर सकते हैं?

(A) 15

(B) 10

(C) 12

(D) 20

Ans – (B)

43. सहकारी नियोजन समिति का गठन किसके नेतृत में किया गया था?

(A) आर०जी० सरैया

(B) मेक्लेगन

(C) होरेश

(D) चेम्सफोर्ड

Ans – (A)

44. भारत में सहकारिता आंदोलन का प्रारंभ का हुआ?

(A) 1904 ई०

(B) 1905 ई०

(C) 1907 ई०

(D) 1920 ई०

Ans – (A)

45. सहकारिता प्रांतीय सरकारों का हस्तांतरित विषय कब बनी?

(A) 1929 ई०

(B) 1919 ई०

(C) 1918 ई०

(D) 1914 ई०

Ans – (B)

46. सूक्ष्म वित्त योजना साख या ऋण की सुविधा किन्हें उपलब्ध कराता है?

(A) मध्यम वर्ग

(C) गरीब वर्ग

(B) व्यावसायिक वर्ग

(D) कृषक वर्ग

Ans – (B)

47. भारत में सूक्ष्म वित्त की शुरुआत किस दशक के बीच हुई?

(A) 1970

(B) 1980

(C) 1990

(D) 2000

Ans – (C)

48. स्वयं-सहायता समूह में सदस्यों की संख्या सामान्यतः होती है -

(A) 100-200

(B) हजारों

(C) 15-20

(D) अनगिनत

Ans – (C)